डॉ सतीश "बब्बा" की पांच कविताएँ

"अहंकार"

यहां सब कोई,

अहंकार में जी रहा है,

अहंकार को,

बचाने के लिए,

जाने कितने झूठ,

बोल रहा है,

अहंकार को,

कायम रखने के लिए,

झूठ पे झूठ, झूठ पे झूठ,

बोले जा रहा है!

अहंकार के लिए,

लड़ता है,

अहंकार के लिए,

मरता है,

अहंकार के लिए,

कत्ल करता है,

अहंकार के लिए,

रिश्ते तोड़ता है!

अहंकार को,

बचाने के लिए,

किसी को,

बोलने नहीं देता!

जब दो अहंकार,

टकराते हैं,

तब होता है बहुत,

भयंकर विस्फोट!

मैं और अहंकार का,

बहुत गहरा,

बहुत पुराना,

नाता है!

मैं सबकुछ हूं,

यही तो अहंकार की,

असली पहचान है,

मैं, अहंकार का,

रिश्तेदार है,

कोई सच बोल रहा है,

सच बोलना चाहता है,

अहंकार उसे बोलने नहीं देता!

अहंकार,

सच को हराने की,

पूरी कोशिश करता है,

अहंकार में ही,

पूरा जीवन बीत जाता है,

जब - तक अहंकारी को,

यह पता चलता है,

कि, अहंकार में मैंने,

जीवन बर्बाद किया है,

तब - तक वह,

चिता की ओर ही,

जाने लायक बचा है,

और वह जल जाता है,

अपने अहंकार के साथ,

मैं को साथ लेकर,

अहंकार को जलना पड़ता है!!

(16/05/2024)

"साहित्यकार"

हां मैं साहित्यकार हूं,

नजरों में आपके बेकार हूं,

अज्ञात बीमारी का शिकार हूं,

दरिंदों, भेड़ियों से अलग हूं!

मैं करता हूं,

मानवीय उद्धार,

मानवता के लिए,

मार्ग प्रशस्त!

मैं तेरे, उसके, सबके,

मन की बात लिखता हूं,

एक स्वस्थ, सभ्य,

समाज स्थापना के लिए,

लिखता हूं,

फिर भी मैं,

उपेक्षित हूं क्यों?

मुझे जो मिलना चाहिए था,

वह नहीं मिला क्यों?

मैंने युगों - युगों से,

जगाना चाहा,

सही जीवन का,

मार्ग दिखाना चाहा,

फिर भी मुझपर,

उंगलियों उठाई गईं!

उपेक्षा, तिरस्कार के साथ,

लोग मनाते रहे,

यह परेशान हो,

कंगाल हो!

हंसते रहे मेरी,

परेशानियों पर,

मेरी बरबादी पर,

किसी ने हमदर्दी नहीं की!

मैं लुटता रहा,

भरे बाजार भीड़ में,

सब हंसते रहे,

खीसेंनिपोरकर,

मैंने क्या बिगाड़ा था इनका,

मेरी खता थी क्या,

साहित्य लिखना,

गरीबी में भी मस्त रहना!

इसके बावजूद भी,

मैंने किसी को,

बद्दुआ नहीं दी,

सबको पढ़ाने की,

कोशिश की है,

मानवता का पाठ!

क्या मेरा,

साहित्यकार होना,

मेरे द्वारा किया गया,

अपराध है?

कुछ भी हो मैं,

गर्व से कहता हूं,

मैं कुछ दिन का मेहमान हूं,

हां मैं साहित्यकार हूं!!

(16/05/2024)

"अनुभव"

अगर जीवन का,

असली सुख चाहते हैं तो,

भद्र पुरुष मेरी बातें,

गांठ से बांध लें!

सुबह उठकर,

चौका, बर्तन,

झाड़ू, पोंछा,

करने के बाद,

पत्नी को जगाएं,

कहें कि,

मेरी जान, बरारोहे,

पानी भर दिया है!

फिर रसोई का,

काम निपटा कर,

थाली परोसें,

पत्नी को खिलाएं,

बाद में खुद खाकर,

काम पर जाएं!

रात में,

सोने से पहले,

पत्नी के,

हाथ - पैर दबाएं,

पत्नी को सुलाकर,

फिर खुद सो जाएं!

सच कहता हूं,

कभी भी,

गृह क्लेश,

झगड़ा नहीं होगा!

यह नुस्खा,

जरूर अपनाएं,

अनुभव मुझे भी,

सौखीलाल ने,

बताया है,

यहां तक कि,

यह नुस्खा,

स्वयं धर्मराज,

युधिष्ठिर ने,

अपनाया था,

द्रौपदी के पैर,

दबाया करता था,

तभी तो महाभारत,

फते कर पाया था!

हालांकि,

यह बात और है,

यह नुस्खा,

सिहाकिम ने,

बताया था,

फिर भी सिहाकिम,

आजीवन,

जीवन,

कुंवारा ही,

बिताया था,

और शादीशुदा,

लोगों से ज्यादा,

अनुभव वह,

कुंवारा ही,

कर पाया था!!

(16/05/2024)

"आ लौट आ"

जब से तू गई प्रिए,

नजर में नहीं आई प्रिए,

यह सब घर - गृहस्थी,

तूने ही तो बनाई प्रिए!

गर्मी आई, ठंडी आई,

बरसात भी गई आई,

तेरी याद भी बहुत आई,

पर तू क्यों नहीं आई?

मेरे जीवन का,

ऐसा कौन सा संगीत है,

जो तेरे बिना पूरा है,

सच कहता हूं प्रिए,

तेरे बिना तो यह मेरा,

मैं, तक अधूरा है!

पता नहीं कौन सी गलती,

कर डाली थी मैंने,

जो तू चली गई दूर कहीं,

ऐसा बेदर्दीपन ठीक नहीं!

क्या तू भूल गई,

तू ही तो कहा करती थी,

'बब्बा' तेरे बिना,

यह घर यह जायदाद,

बिल्कुल अच्छे नहीं लगते,

तू कहीं मत जाया कर,

तू शाम तक हर हाल में,

लौट आया कर!

और तू ही चली गई,

मुझे छोड़कर,

तुझे क्या हुआ,

तू मेरे बिना रह रही है!

तू चली गई मुझसे दूर,

मैं चाहकर भी नहीं,

खोज पा रहा हूं,

बस मौन चिल्ला रहा हूं!

जानती है,

तू जहां थापती थी उपले,

और पुकारती थी मुझे,

क्यों चुप हो गई अकेले,

आ फेंड़ बांध फिर चलें,

मेंड में दोनों पैदल चलें!

जिस कटोरे में तू,

मुझे खिलाती थी,

ढोकले, फेफले,

ओ मेरे जीवन की सांसें,

अब वहां कुछ भी नहीं,

ढूंढ़ती हैं सूनी नजर मेरी,

बिना आवाज किए,

आ लौट आ, आ लौट आ!

कितनी रोशनियां हैं,

फिर भी अंधेरा है,

तेरे बिना मेरा जीवन,

अधूरा है!

मैं मर चुका हूं उसी दिन,

जिस दिन तुझे दी थी मुखाग्नि,

फिर भी चलता हूं,

घसीट रहा हूं यह,

पार्थिव, बेजान शरीर,

बिना आत्मा की लाश यह!

कोई भी पुकारता है तो,

लगता है तू है,

तू वहां जरूर होगी,

दौड़ता हूं टूटी सांसें हैं!

टकराकर लौट आता हूं,

फुटबॉल सा, दीवार सख्त है,

अब यह दीवारें तक,

नहीं बोलतीं मुझसे,

सब मौन खड़ी हैं,

जो कभी खिलखिलाती थी!

कब तक ढोता रहूंगा,

इस निर्जीव शरीर को,

आ लौट आ, आ लौट आ!

फिर कभी नहीं तुझे,

अलग करूंगा,

दूध और पानी सा,

साथ जलूंगा, साथ बहूंगा!

मां जब गई थी तब तूने,

मुझे संभाला था तूने,

कहा था कभी जुदा नहीं हूंगी,

क्यों नहीं निभाया तूने?

फिर यह कैसे हुआ,

गलती मेरी है क्या,

मैं पुकारता हूं,

आ लौट आ, आ लौट आ!!

(16/05/2024)

"मैं खुद हूं कंगाल प्रिए"

मैं तुमको क्या दे पाऊंगा,

मैं खुद हूं कंगाल प्रिए,

था साथ तेरा मधुवन, उपवन,

अब उजड़ गया संसार प्रिए!

वो गंगा की उत्ताल तरंगें,

दिल गाता था मल्हार प्रिए,

अब मौन हो गये सुर - ताल सभी,

अंधेरे में डूबा मेरा संसार प्रिए!

वो चन्दन काठ की शैय्या,

जिस पर तूं थी सोई प्रिए,

अब इन करील के कांटों में,

नहीं आती मुझे है नींद प्रिए!

वो धवल चांदनी सा,

तेरा बदन कोहिनूर प्रिए,

लुटा खजाना मेरा है,

मैं हो गया कंगाल प्रिए!

जीवन का सार निकल गया,

फिरता हूं बेकार प्रिए,

तू गीत मनोहर थी मेरी,

मैं हो गया बेसुरा भंगार प्रिए!

ए धुंध जहां में छाई है,

मैं ढूंढ रहा बेकार प्रिए,

तू धन ऐश्वर्य की मालिक,

मैं खुद हूं कंगाल प्रिए!!

(16/05/2024)

डॉ सतीश "बब्बा"

पता - डॉ सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम+ पोस्टाफिस= कोबरा, जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208.

मोबाइल - 9451048508, 9369255051. ई मेल - babbasateesh@gmail.com